भट्टारक ललितकीर्ति

जीवन-परिचय : भट्टारक ललितकीर्ति भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य हैं। ये दिल्ली की भट्टारकीय गद्दी के पट्टधर थे। ये बड़े विद्वान और वक्ता थे। मन्त्र-तन्त्र आदि कार्यों में भी निपुण थे। ये अत्यन्त प्रभावक आचार्य थे।

ललितकीर्ति का समय विक्रम संवत् की 19वीं शती निश्चित है।

रचना-परिचय : पंडित परमानन्दजी शास्त्री ने ललितकीर्ति के नाम से निम्नलिखित 25 रचनाओं का निर्देश किया है—

1. महापुराण (आदिपुराण + उत्तरपुराण), 2. सिद्धचक्रपाठ, 3. नन्दीश्वर व्रतकथा, 4. अनन्तव्रत कथा, 5. सुगन्धदशमी कथा, 6. षोडशकारण कथा, 7. रत्नत्रयव्रत कथा, 8. आकाशपञ्चमी कथा, 9. रोहिणीव्रत कथा, 10. धनकलश कथा, 11. निर्दोषसप्तमी कथा, 12. लब्धिविधान कथा, 13. पुरन्दरविधान कथा, 14. कर्मनिर्जराचतुर्दशीव्रत कथा, 15. मुकुटसप्तमी कथा, 16. दशलाक्षणीव्रत कथा, 17. पुष्पाञ्जलिव्रत कथा, 18. ज्येष्ठजिनवर कथा, 19. अक्षयनिधिदशमी व्रत कथा, 20. निःशल्याष्टमी विधान कथा, 21. रक्षाविधान कथा, 22. श्रुतस्कन्ध कथा, 23. कञ्जिकाव्रत कथा, 24. सप्तपरमस्थान कथा, 25. षट्रस कथा।